एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 12 (दिसम्बर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

गेलार्डिया की खेती एवं कीट और रोग प्रबंधन

*पंकज कुमार मीणा
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pankajmeena626@gmail.com

मौसमी पुष्पों में गेलार्डिया एक महत्वपूर्ण पुष्प है। यह गर्मी, बरसात व सर्दी तीनों ही मौसम में आसानी से उगाया जा सकता है। फरवरी-मार्च में बुवाई करने पर फूल गर्मियों में और सितम्बर-अक्टूबर में बुवाई करने पर सर्दियों में फूल आते हैं।

जलवायु एवं भूमि

गेलार्डिया की अच्छी उपज के लिए खुली धूप वाली जगह और जैविक खाद युक्त भूमि उत्तम रहती है। शीत ऋतु में पाला पड़ने से बचाव करना अति आवष्यक है।

जातियां एवं किस्में

इसकी दो मुख्य प्रजातियां हैं-

गेलार्डिया पिक्टा : इसमें बड़े आकार के पुष्प आते हैं।

गेलार्डिया लोरेन्जियाना: इसमें फूल पंखुड़ियों वाले, बिखंडित कोरों व एक ही पुष्प में कई आकर्षक रंगो मे डबल पुष्प आते हैं। लोरेन्जियाना की प्रमुख किस्में सनशाइन, स्ट्रान, ओर गेटी डबल मिक्सड हैं। एक संकर किस्म टेट्रा फिस्टा हाल ही में विकसित की गई है। इसमें फूल डबल आकार में बड़े और पंखुड़ियां चमकीली लाल रंग की पीले किनारों वाली होती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें बड़े सिंगल फूलों वाली ग्रेन्डीलोरा नामक कुछ बहुवर्षीय किस्में भी हैं।

खेत की तैयारी

खेत की 3 से 4 जुताई करें और पाटा लगाकर खेत को समतल कर लें। अंतिम जुताई के समय 10 से 13 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टर की दर से भूमि में डालनी चाहिए। सिंचाई के लिए सुविधानुसार खेत में क्यारियां बना लेनी चाहिए। भरपूर पुष्प लेने के लिए उर्वरकों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। 200 किलो यूरिया, 400 किलो सुपर फास्फेट, 100 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश उर्वरक प्रति हैक्टर की दर से डालें। गोबर की खाद, सुपर फास्फेट व म्यूरेट ऑफ पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा व यूरिया की आधी मात्रा रोपाई के पूर्व डालें।

बुवाई

आवश्यकतानुसार बीज नर्सरी, लकड़ी के खोखों, गमलों, मिट्टी के तसलों एवं प्लास्टिक ट्रे में नवम्बर-दिसम्बर माह में बोये जा सकते हैं। बीज बोने से पूर्व किसी कवकनाशी दवा जैसे थाइरम या बाविस्टीन आदि से उपचारित कर बोयें। बुवाई के 4 से 6 सप्ताह बाद पौध खेत में रोपाई के लायक हो जाती है। एक हैक्टेयर की रोपाई के लिए 500 से 600 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

पौध की रोपाई

गेलार्डिया के पौधों की रोपाई समतल क्यारियों में की जाती है। पौध की रोपाई 60 सेमी. लाइन से लाइन एवं 45 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखकर करनी चाहिए।

निराई-गुड़ाई

इस फसल में दो तीन बार गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट करें। गुड़ाई करते समय पौधों के चारों ओर मिट्टी चढ़ावें। समय-समय पर निराई-गुड़ाई कर खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें।

सिंचाई

गैलार्डिया में सही समय पर सिंचाई करने पर फूल खिलते रहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में 7 दिन के अन्तराल पर परन्तु वर्षा ऋतु में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए अर्थात् वर्षा न होन की स्थिति में ही सिंचाई करें अन्यथा पौधों में जड़ गलन जैसे रोग लग सकते हैं। शरद ऋतु में 15 दिन अन्तराल पर सिंचाई करें।

कीट प्रबंधन

चेंपा : यह पत्तियों एवं फूलों से रस चूसता है। इसके नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. 1 मि. ली. प्रति लीटर जल की दर से छिड़काव करे।

पर्ण-चूषक एवं थ्रिप्स : यह कीट पत्तियों, फूलों एवं टहनियों से रस चूसकर उपज को कम कर देते हैं। मेटासिस्टॉक्स या मैलाथियॉन एक मि.ली. प्रति लीटर पानी व घोल का छिड़काव करें।

स्पाइडर माइट : केल्थेन 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करके इस कीट पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

व्याधि प्रबंधन

चूर्णी फफूँद : यह रोग फंफूद से होता है। इसके नियंत्रण हेतु डीनोकेप या केराथेन 1 मि.ली. प्रति लीटर की दर से जल में मिलाकर छिड़काव करें।

आर्द्र गलन रोग: यह रोग अधिक सिंचाई से नर्सरी अवस्था में होता है, इसके नियंत्रण हेतु बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति लीटर जल में विलयन बनाकर मृदा में छिड़काव करें।

जड़ गलन रोग : इस रोग से पौधों की जड़े सड़ जाती हैं। नियंत्रण हेतु केप्टॉन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से भूमि को उपचारित करें।

पत्ती धब्बा रोग : यह रोग भी फफूंद से होता है जिसे बोर्डेक्स मिश्रण के 1 प्रतिषत को घोल का छिड़काव करने से नियंत्रित किया जा सकता है।

बीजोढ़ माइकोलोरा: यह रोग कवकों द्वारा होता है। इसके नियंत्रण हेतु बीजों को डाइथेन एम-45, 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से उचारित करके बुवाई करें।

फूलों की तुड़ाई एवं उपज

पूर्ण विकसित पुष्पों की तुड़ाई समय पर करते रहना चाहिए। हर तीसरे रोज पुष्पों की तुड़ाई करें जिससे आगे पुष्प निरंतर बनते रहें। पुष्प चुनते समय ध्यान रहे कि सभी पुर्ण विकसित पुष्प तथा डोड़े पौधों पर छूटने न पायें। प्रति हैक्टर 100 से 150 क्विंटल पुष्पोत्पादन प्राप्त होगा।